वर्ष - ०१ | अंक - दस | जुलाई , २०२५

वर्धा डायरी

(हिन्दी की मासिक ई - पत्रिका)

चेतना का दीप

ज्ञान का हिमालय

(हिन्दी विश्वविद्यालय की यादों का पिटारा)

लेखिका एवं फ़िल्म निर्देशक सीमा कपूर का साक्षात्कार

विशेषांक

संपादन - विवेक रंजन सिंह , अभय दुबे

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के विद्यार्थियों का उपक्रम

वर्धा डायरी

वर्ष - ०१ | अंक - दस | जुलाई , २०२५

हिंदी विश्वविद्यालय का प्रशासनिक भवन

हिन्दी विश्वविद्यालय का कुलगीत

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
चेतना का दीप है यह, ज्ञान का हिमालय
हिंदी विश्वविद्यालय।

नस्ल धर्म और देशों की सीमाएँ टूट रही
एक पांव रखकर देखो , सौ राहें फूट रही
सत्य अहिंसा और शोध के सपनों का महालय
हिंदी विश्वविद्यालय ।
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

मटमैली चट्टानों का, वर्धा का यही पठार
बंजर पर हरियाली की जय का प्रतीक साकार
दुर्लभ पांडुलिपियों का यह अनुपम संग्रहालय।
हिंदी विश्वविद्यालय ।
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

विद्या बुद्धि मनीषा की इस तपो भूमि का ताप बने
चिंतन का आलाप बने , अपने दीपक आप बने
अंधकार के विरुद्ध है यह , महाज्योति प्रज्ञालय।
हिंदी विश्वविद्यालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
हिंदी विश्वविद्यालय

- कवि नरेश सक्सेना

वर्ष - ०१ | अंक - दस | जुलाई , २०२५

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय
हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(पूर्ण रूप से विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका)

वर्धा डायरी

(हिन्दी की मासिक ई - पत्रिका)

दो शब्द

'वर्धा डायरी' ई-पत्रिका महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित की जा रही है। यह पत्रिका पूर्ण रूप से एक खुला मंच है, जहां आप अपने रचनात्मक विचारों को पाठकों के साथ साझा कर सकते हैं। इस पत्रिका को शुरू करने का उद्देश्य यही है कि हिंदी विश्वविद्यालय परिसर में अध्ययनरत छात्रों के भीतर छिपी रचनाधर्मिता को जागृत कर, उन्हें सबके सामने प्रस्तुत किया जाए। हिंदी विश्वविद्यालय अपने जिन उद्देश्यों को लेकर स्थापित किया गया था, उसको पूरा करने में हमारा एक छोटा सा योगदान है। हम चाहते हैं कि आप अपनी रचनाओं से एक सकारात्मक वातावरण स्थापित करने में हमारी मदद करें। हमारा आपसे आग्रह है कि आप अपनी जिन भी रचनाओं को भेजें वो आपकी मूल हों । पत्रिका को हम सिर्फ़ विश्वविद्यालय परिसर तक सीमित न करके, सभी लेखकों के लिए खोल रहे हैं। आइये महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम की कड़ी का एक हिस्सा बन इस उपक्रम को आगे बढायें। इसी आशा के साथ आपकी रचनाओं का स्वागत है । पढ़ते रहिये , रचते रहिये और नया गढ़ते रहिये।